अध्याय - 6
नागरिक सुविधाओं का प्रारूप

6.1 प्रस्तावना -

आदिकालीन मानव स्वतंत्र रूप में वनों में विचरण करता था, उसकी आवश्कताएं केवल भोजन एकत्रीकरण तक सीमित थी। पाषाण युग में मानव ने नदियों के किनारे रहना आरम्भ किया। कृषि उपजों को नदी घाटियों में पैदा करना प्रारम्भ किया था। धीरे–धीरे मनुष्य की आवश्यकताओं में वृद्धि हुई जिससे विनिमय की प्रथा का प्रारम्भ हुआ। वर्तमान समय में औद्योगिक विकास मानवीय आवश्यकताओं के अनुरूप हो रही है। अतः नागरिक सुविधाओं का अध्ययन आवश्यक है। नगरों में विभिन्न प्रकार की नागरिक सुविधाओं का होना अत्यन्त आवश्यक है प्रस्तुत अध्ययन में जनपद औरैया के नगरों की नागरिक सुविधाओं का प्रारूप प्रस्तुत किया गया है।

6.2 सामुदायिक सुविधायें -

6.2.1 शैक्षिक सुविधायें -

प्रत्येक समस्याओं के समाधान के लिए हमारा ध्यान शिक्षा की ओर ही जाता है। किसी भी प्रकार के परिवर्तन की धुरी कहीं न कहीं शिक्षा के महत्व और उसकी अपनी गुणवत्ता से अवश्य जुड़ी होती है। विश्व भर में परिवर्तन के अध्येताओं ने भी शैक्षिक परिवर्तन, उसकी गति तथा प्रगति की महत्ता को स्वीकार किया है। अनुभव तथा शोध के आधार पर यह भी तय पाया गया है कि परिवर्तन अवश्यंभावी है, परंतु हर परिवर्तन प्रगति की ओर ही ले जाए यह आवश्यक नहीं है। सफल वही हुए जो भविष्य की ओर उन्मुख थे तथा राष्ट्र, समाज, लोगो तथा व्यक्तियों की अपेक्षाओं, आकांक्षाओं और सपनों को पूरा करने का प्रयास करते थे। प्रत्येक क्षेत्र विशेष की शिक्षा व्यवस्था उसकी अपनी संस्कृति से जुड़ी होती है और उसकी जड़े जितनी

गहराई तक जाती है, आगे के समय में वह उतनी ही पुष्पित, पल्लवित तथा धनी छाया देने वाली होगी।[1]

सारणी क्रमांक 6.1

जनपद औरैया : शैक्षिक सुविधायें (प्रतिलाख जनसंख्या पर)

क्र0 सं.	नगर का नाम	प्राथमिक विद्यालय	जू0हा0 स्कूल	इण्टर कालेज	महा विद्यालय	कुल योग
1	औरैया	29.35	135.93	20.08	01.54	186.90
2	विधूना	16.14	28.24	36.31	08.07	88.75
3	अजीतमल	24.44	52.96	16.29	04.07	97.76
4	दिबियापुर	04.86	58.27	38.84	14.57	116.53
5	फफूंद	19.56	39.11	39.11	00.00	97.78
6	अटसू	75.52	37.76	18.88	00.00	132.16
7	अछल्दा	179.40	191.36	23.92	00.00	394.69
	जनपद औरैया	33.14	86.41	26.04	04.14	149.73

उल्लिखित सारणी क्रमांक 6.1 को देखने से स्पष्ट परिलक्षित होता है कि जनपद औरैया के नगरीय क्षेत्रों में प्रायमरी स्तर से लेकर महाविद्यालय स्तर तक के मात्र 253 शिक्षण संस्थायें है। नगर स्तर पर सर्वाधिक शिक्षण संस्थायें औरैया नगर में 121 तथा सबसे कम 14 अटसू नगर में है। उल्लिखित शैक्षणिक सुविधाओं को प्रतिलाख जनसंख्या पर परिगणित किया जाये तो जनपद औरैया के नगरीय क्षेत्रों में प्रति लाख जनसंख्या पर149. 73 शिक्षण संस्थायें है। सर्वाधिक शिक्षण संस्थायें अछल्दा टाउन एरिया में 394.69 संस्थायें प्रतिलाख व्यक्ति तथा सबसे कम विधूना नगर में 88.75 संस्थायें प्रतिलाख व्यक्तियों पर हैं प्रतिलाख जनसंख्या पर प्राथमिक विद्यालय 33.14 जूनियर हाईस्कल 86.41 इण्टर कालेज 26.04 तथा महाविद्यालय 4.14 हैं यहॉ उल्लेखनीय है कि फफूंद अटसू व अछल्दा नगर केन्द्रों पर कोई

भी महाविद्यालय नहीं है। जपद के केवल औरैया, विधूना, अजीतमल व दिबियापुर में ही महाविद्यालय स्तर की शिक्षण सुविधायें है। विस्तृत विवरण हेतु सारणी क्रमांक 6.1 दृष्टव्य है।

नगरीय केन्द्रों में शिक्षा शैक्षिक संस्थओं का विकास एवं वृद्धि :-

20वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में औरैया नगर में एक परास्नातक महाविद्यालय तथा तीन माध्यमिक स्तर की शिक्षण संस्थाओं का विकास हुआ। वर्तमान समय में औरैया में 4 महाविद्यालय एवं दस माध्यमिक स्तर की शिक्षण संस्थायें हैं। दिबियापुर नगर में 20वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में एक परास्नातक महाविद्यालय एवं एक माध्यमिक स्तर का विद्यालय था। वर्तमान समय में दिबियापुर नगर में तीन महाविद्यालय एवं दो माध्यमिक स्तर के विद्यालय हैं। विधूना नगर में वर्तमान समय में दो महाविद्यालय एवं चार माध्यमिक स्तर के विद्यालय हैं। फफूंद नगर में 20वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में एक माध्यमिक विद्यालय था। वर्तमान में फफूंद में चार माध यमिक विद्यालय हैं। बाबरपुर अजीतमल नगर में 20वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में एक महाविद्यालय था तथा एक माध्यमिक स्तर का विद्यालय था। वर्तमान समय में बाबरपुर अजीतमल में दो महाविद्यालय एवं चार माध्यमिक स्तर के विद्यालय हैं। अछल्दा नगर में वर्तमान समय में दो माध्यमिक स्तर के विद्यालय हैं।

6.2.2 चिकित्सा सुविधायें -

जनपद में आठ वर्षो के अन्तराल में स्वास्थ्य सम्बन्धी सुविधाओं में लगभग 40 प्रतिशत की वृद्धि अंकित की गयी है जो इस तथ्य का स्पष्ट परिचायक है कि नगरीय व ग्रामीण क्षेत्रों के निवासियों की स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ी है। स्वास्थ्य सम्बन्धी सुविधाओं की उक्त बढ़त यह भी दर्शा रही है कि निकतटम दूरी पर स्वास्थ्य सुविधा उपलब्ध होने से समय की बचत होती है। परिणामस्वरूप जनपद के निवासियों के मानसिक व शारीरिक

स्वास्थ्य में पर्याप्त सुधार हुआ है। स्वास्थ्य का स्तर बढ़ने से जनपदवासियों की कार्यक्षमता पर धनात्मक प्रभाव दृष्टिगोचर हो रहा है।

सारणी क्रमांक 6.2

जनपद औरैया : सामुदायिक सुविधायें प्रतिलाख जनसंख्या पर 2010-11

क्र0 सं.	नगर का नाम	स्वास्थ्य सुविधायें	बैंक सुविधा	डाकघर सुविधा	कृषिसेवा केन्द्र	कुल योग
1	औरैया	06.18	12.36	06.18	03.09	27.80
2	विधूना	16.14	24.20	04.03	08.07	52.44
3	अजीतमल	16.29	16.29	08.15	04.07	44.81
4	दिबियापुर	19.42	19.42	19.42	04.86	63.12
5	फफूंद	26.08	19.56	06.52	06.52	58.67
6	अटसू	28.32	09.44	09.44	09.44	56.64
7	अछल्दा	35.88	35.88	11.96	23.92	107.64
	जनपद औरैया	15.39	17.16	08.29	05.92	46.75

उल्लिखित सारणी के अवलोकन सेएक तथ्य उभरकर सामने आता है कि जनपद औरैया के सातों नगरों में स्वास्थ्य सुविधाओं का वितरण प्रतिलाख जनसंख्या पर मात्र 15.39 है। कहना अनुचित न होगा कि स्वास्थ्य सुविधाओं से सम्बन्धित सभी छोटी–बड़ी इकाईयों को जोड़कर देखने पर स्थिति अति भयावह प्रतीत हो रही है। प्रतिलाख जनसंख्या पर मात्र 15.39 इकाईयॉ अर्थात् प्रतिइकाई पर लगभग 6498 व्यक्तियों की देखभाल का अभार है जो बिल्कुल व्यावहारिक नहीं कहा जा सकता है। नगर स्तर पर दृष्टिपात करें तो अपेक्षाकृत बेहतर सुविधा अछल्दा नगर (35.88), तथा सबसे दयनीय स्थिति औरैया नगर (6.18) की है। जो जनपद का मुख्यालय भी है। विस्तृत विवरण हेतु सारणी क्रमांक 6.2 देखी जा सकती है।

नगरीय केन्द्रों में चिकित्सा क्षेत्रों का विकास एवं वृद्धि :-

20वीं शताब्दी के प्रारम्भ में औरैया नगर में एक सार्वजनिक चिकित्सालय (पुरुष एवं महिलाओं दोनों के लिये) की स्थापना हुई थी। इसके अतिरिक्त नगर में एक पुलिस चिकित्सालय एवं एक पशु चिकित्सालय भी है। इसके अतिरिक्त नगर में 4 प्राइवेट नर्सिंग होम तथा 5 प्राइवेट क्लीनिक हैं। नगर में उत्तर की ओर ककोर मुख्यालय के पास 100 शैय्याओं वाला अस्पताल प्रस्तावित है। दिबियापुर में एक सार्वजनिक चिकित्सालय पुरुष तथा महिला दोनों के लिये है। गैल प्लांट के अन्दर धनवन्तरि अस्पताल है। एन0टी0पी0सी0 में भी एक अस्पताल है। इसके अतिरिक्त दिबियापुर में दो प्राइवेट नर्सिंग होम हैं। एक आंख का प्राइवेट अस्पताल है तथा 4 प्राइवेट क्लीनिक हैं। विधूना में एक सार्वजनिक चिकित्सालय है। इसके अतिरिक्त दो प्राइवेट नर्सिंग होम तथा 4 निजी क्लीनिक हैं। इसके अतिरिक्त अछल्दा एवं अटसू में एक–एक सार्वजनिक चिकित्सालय है।

6.2.3 विद्युत आपूर्ति -

देश की आर्थिक विकास तथा लोगों के जीवन स्तर में सुधार के लिये भोजन के बाद सबसे महत्वपूर्ण वस्तु शायद ऊर्जा ही है। किसी भी देश की खुशहाली का पता लगाने के लिये आजकल जिस पैमाने का प्रयोग किया जा रहा है। वह है प्रति व्यक्ति ऊर्जा की औसत खपत। इसका अर्थ यह हुआ कि किसी भी देश की प्रगति का अनुमान उस देश में ऊर्जा के उत्पादन और खपत से लगाया जा सकता है। पर्याप्त ऊर्जा के बिना किसी भी प्रकार के पैमाने पर खेती करना, पानी की पूर्ति, कपड़े की उत्पादन और भवनों के निर्माण के लिये पर्याप्त मात्रा में बिजली उपलबध होना बेहद आवश्यक है। इसीलिये योजना निर्माण की प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण पहलू यह भी कि विद्युत उत्पादन और इसके प्रभावी उपभोग में तेजी से बढोत्तरी सुनिश्चित की जाये। ऊर्जा का उपयोग करने वाले विभिन्न क्षेत्रों की मांग को पूरा करने की लिये बड़े पैमाने पर पर पूंजी निवेश की जरूरत होती है।

यही कारण है कि सातवी और आठवीं योजना में ऊर्जा के क्षेत्र के लिये निर्धारित धनराशि कुल योजना खर्च का 30 प्रतिशत यानि लगभग एक तिहाई है। इतने बड़े पैमाने पर पूंजी लगाने के बाद भी हमारी अर्थव्यवस्थ के सभी क्षेत्रों में बिजली की कमी महसूस की जा रही है।

किसी भी क्षेत्र के आर्थिक विकासस्तर के मापन हेतु ऊर्जा का उपभोग घटक के रूप में माना जाता है। हमारे प्रदेश में विगत वर्षों से ऊर्जा के उपभोग और उत्पादन में भारी वृद्धि हुई है। अध्ययन क्षत्र में ऊर्जा का प्रतिव्यक्ति औसत उपभोग जोकि क्षेत्र के समृद्धि और विकास का प्रतीक है। जनपद औरैया में विद्युत उपभोग का विभिन्न कार्यों मे निम्नवत् है। घरेलू प्रकाश एवं लघु विद्युत शक्ति उपयोग में 33590 किलोवाट उपभोग होता है। औद्योगिक गतिविधियों में 36120 हजार किलोवाट, सार्वजनिक प्रकाश व्यवस्था में 3002 हजार किलोवाट तथा कृषि कार्यों में 17171 हजार किलोवाट एवं अन्य कार्यो में 650 हजार किलोवाट विद्युत का उपयोग हो रहा है।

6.2.4 परिवहन तन्त्र की स्थिति, विकास एवं वृद्धि :-

परिवहन तन्त्र की स्थिति 20वीं सदी में औरैया जनपद के विभिन्न नगरों में व्यावसायिक एवं व्यापारिक क्षेत्रों में वृद्धि हो जाने के कारण यातायात का महत्व और भी बढ़ गया है। 20वीं शताब्दी तक औरैया नगर सुभाष चौराहा के आस–पास ही बसा हुआ था। 20वीं शताब्दी के पश्चात् शहर के अन्दर यातायात में परेशानी के कारण शहर के पश्चिम की ओर बाईपास का निर्माण किया गया जो उत्तर में नरायनपुर से लेकर फफूंद चौराहे तक जाता है। बाबरपुर–अजीतमल औरैया–इटावा मार्ग के दोनों ओर फैला हुआ है। यहां पर यातायात में व्यवधान होने के कारण शहर के दक्षिण की ओर बाईपास निकाला गया है। इसी प्रकार जनपद के अन्य नगरों में भी यातायात की समस्याओं के समाधान के लिये नई सड़कों एवं बाईपास का निर्माण किया गया है।

6.3 आर्थिक सुविधाओं का प्रारूप –

6.3.1 बाजार की सुविधा –

बाजार उस स्थान को कहते है जहॉ पर वस्तुओं के क्रेता व विक्रेता एकत्रित होते है तथा माल बेंचने व खरीदने का कार्य करते है। परंतु बाजार के सम्बन्ध मे यह संकुचित दृष्टिकोण है, क्योंकि वस्तु के क्रेता का एक स्थान पर होना आवश्यक नही है, क्योंकि वस्तु के क्रय–विक्रय का कार्य एजेन्टों द्वारा, टेलीफोन द्वारा, डाक द्वारा भी किया जाता है। उक्त तथ्यों को ध्यान में रखते हुए यह भी कहा जा सकता है, कि बाजार शब्द का अभिप्रायः किसी स्थान विशेष से नहीं है, अपितु उस समस्त क्षेत्र में है, जिसमें क्रेता व विक्रेता फैले रहते है, एवं जहॉ वस्तुओं के क्रय और विक्रय की क्रियाएं सम्पादित की जाती है।

बाजार अधिकांशतः ऐसे क्षेत्रों की जनसंख्या की आवश्यकताओं की पूर्ति करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है, जिनकी अर्थव्यवस्था में प्राथमिक क्रियाकलापों की प्रधानता होती है, क्योंकि ऐसे क्षेत्रों में निवासियों के आर्थिक दृष्टि से कमजोर होने तथा उनकी आवश्यकताएं सीमित होने के कारण यहॉ दैनिक बाजारों का परिपोषण सुगमता से नही हो पाता है। फलतः इन क्षेत्रों के निवासी अपनी आधारभूत दैनिक आवश्यकता की वस्तुओं की आपूर्ति हेतु इन्ही बाजारों पर निर्भर है। मानचित्र को देखने से स्पष्ट परिलक्षित होता है कि औरैया जनपद में बाजार केन्द्रों का वितरण असमान है। जनपद के मध्यवर्ती भाग में विशेष रूप से सदर तहसील में बाजारों का घना संकेन्द्रण है तत्पश्चात् दक्षिणी पूर्वी भाग में विपणन केन्द्रों की सघनता है। जनपद का दक्षिणी पश्चिमी भाग नदियों की अधिकता एवं बाढ़ग्रस्त क्षेत्र होने के कारण विरल विपणन केन्द्रों वाला क्षेत्र है। यहॉ की प्रतिकूल भौगोलिक परिस्थितियॉ विपणन केन्द्रों के विकास में बाधक है।

सारणी क्रमांक 6.3

जनपद औरैया : विकासखण्डवार बाजार, वर्ष 2010-11

क्र0 सं0	विकासखण्ड का नाम	कुल बाजार संख्या	कुल सेवित ग्राम संख्या	कुल सेवित क्षेत्रफल(हे0में)	कुल सेवित जनसंख्या
1	एरवा कटरा	11	108	21555.07	113046
2	अछल्दा	11	116	26841.02	132539
3	अजीतमल	08	110	20219.07	149944
4	विधूना	11	111	31610.56	171003
5	सहार	13	95	29827.70	152806
6	भाग्यनगर	10	133	28831.73	160555
7	औरैया	13	168	36814.60	168002
	योग	**77**	**841**	**195699.75**	**1047895**

स्त्रोत : – बिक्री कर विभाग, औरैया तथा सर्वेक्षण।

सारणी क्रमांक 6.3 के अनुसार औरैया जनपद के सभी विकासखण्ड में कुल बाजारों की संख्या 77 है। जिसमें सर्वाधिक सहार तथा औरैया में 16.88 एवं 16.88 प्रतिशत बाजार है। सबसे कम बाजार अजीतमत विकासखण्ड में 10.39 प्रतिशत है। बाजार सेवित ग्राम में कुल 841 है जिसमें सर्वाधिक बाजार सेवित ग्राम 19.98 प्रतिशत औरैया विकासखण्ड में है तथा सबसे कम बाजार सेवित ग्राम 11.30 प्रतिशत सहार जनपद में है। अन्य जनपदों में 12 से 14 प्रतिशत तक सेवित ग्राम है। कुल सेवित ग्रामों का क्षेत्रफल 195699. 75 हेक्टेयर है जिसमें सर्वाधिक 18.81 प्रतिशत क्षेत्रफल औरैया विकासखण्ड में है तथा सबसे कम 10.33 सेवित क्षेत्रफल अजीतमल विकासखण्ड में है। 16. 15 प्रतिशत सेवित क्षेत्रफल विधूना विकासखण्ड में तथा 15.24 प्रतिशत सेवित क्षेत्रफल सहार विकासखण्ड में है।

6.3.2 बैंक –

नगरों में वित्तीय सुविधा को देखा जाये तो सभी सातों नगरों में मात्र 29 बैंक शाखाये है। सर्वाधिक बैंक शाखायें औरैया नगर में 8 तथा सबसे कम बैंक शाखा मात्र (1) अटसू नगर पंचायत में है। प्रतिलाख जनसंख्या पर दृश्य कुछ और ही परिणाम दर्शाता है। अछल्दा नगर पंचायत में प्रतिलाख जनसंख्या पर 35.88 बैंक है। जोकि सर्वाधिक है। सबसे कम सुविधा अटसू नगर पंचायत में 9.44 है। जनपद स्तर पर यह औसत प्रतिलाख जनसंख्या पर 17.16 हैं अथा्त एक बैंक शाखा पर 5828 व्यक्तियों का दबाव रहता है। विस्तृत विवरण हेतु सारणी क्रमांक 6.2 दृष्टव्य है।

6.3.3 सहकारी समितियॉ –

कृषकों को कृषिकार्य से सम्बन्धित कृषिबीज, रासायनिक उर्वरक तथा कीटनाशक निकटवर्ती कृषि सेवाकेन्द्रों से ही प्राप्त होते है। इस हेतु जनपद के सात नगरों में कुल 10 सेवाकेन्द्र है। औरैया, विधूना, और अछल्दा में दो–दो सेवाकेन्द्र तथा शेष नगरों में में एक–एक सेवाकेन्द्र है। प्रतिलाख जनसंख्या पर दृष्टिपात करने से स्थिति निराशाजनक दृष्टिगोचर होती है। प्रतिलाख जनसंख्या पर जनजपदीय स्तर पर मात्र 5.92 कृषिसेवाकेन्द्र आते है। अछल्दा नगर पंचायत में सर्वाधिक 23.92, अटसू में 9.44 विधूना 8.07 तथा सबसे कम सेवाकेन्द्र औरैया नगर 3.09 प्रतिलाख जनसंख्या पर है। सामुदायिक सुविधाओं के आधार पर अछल्दा नगर संतोषजनक कहा जा सकता है जबकि शेष 6 नगरों में सामुदायिक सुविधायें अतिअल्प है। विस्तृत विवरण हेतु सारणी क्रमांक 6.2 दृष्टव्य है। औरैया नगर में बड़ी कृषि मण्डी समिति की स्थापना की गयी है। ताकि किसानों को फसल का उचित मूलय मिल सके। बाकी सभी नगरीय केन्द्रों में कृषि मण्डियॉ स्थापित की गयी है। सभी नगरों में सहकारी समितियॉ स्थापित है जिससे क्षेत्रीय किसान लाभान्वित हो रहे हैं।

6.3.4 डाकघर बचत बैंक –

डाकघर सुविधा का अवलोकन किया जाये तो परिदृश्य उभरता है कि सभी नगरों कुल डाकघरों की संख्या मात्र 14 है जो अत्यल्प हैं सबसे अधिक 4 डाकघर औरैया व दिबियापुर में तथा दो अजीतमल में है। शेष सभी नगरों में एक–एक डाकघर है। प्रतिलाख जनसंख्या पर डाकघरों का आकलन किया जाये तो दिबियापुर नगर में प्रतिलाख जनसंख्या पर सर्वाधिक 19.42 हैं सबसे कम विूधना नगर में यह औसत 4.03 है। जनपद औरैया के नगरें का समग्र औसत 9.29 डाकघर प्रतिलाख जनसंख्या हैं कहा जा सकताहै कि प्रति डाकघर 10764 व्यक्तियों का दबाव बना रहता है। शोधार्थिनी का सुझाव है कि औरैया जनपद के नगर क्षेत्रों में और अधिक डाकघर खोले जाये जिससे अधिक से अधिक व्यक्तियों को डाकघर की सुविधा प्राप्त हो सके।

6.3.5 कृषि मण्डी –

कृषि मण्डी केन्द्र ऐसे नियमित बाजार केन्द्र होते है जो मण्डी स्थल पर विनिमय से सम्बन्धित सम्पूर्ण स्थापना सम्बन्धी कार्यो को गति प्रदान करते है। यहॉ उपभोक्ताओं और व्यापारियों को पूर्ण स्वतंत्रता भी रहती है। इसके विपरीत स्वतंत्र बाजार व्यवस्था में उपभोक्ता या ग्रामीण विक्रेता व्यापारियों की इच्छा पर आश्रित हो जाता है। जिससे वह स्वतंत्र बाजार कार्य करने में अपने को असमर्थ पाता है। यह प्रक्रिया क्षेत्रीय परिप्रेक्ष्य में एकाधिकारवादी अर्थव्यवस्था को जन्म देती है। जिससे संतुलित और समान प्रक्रिया को अवरोध का सामना करना पड़ता है।

अध्ययन क्षेत्र में कृषि उपज के विपणन की व्यवस्था मण्डियों पर आधारित है। वर्ष 1964 में उत्तर प्रदेश कृषि उत्पादन मण्डी अधिनियम, पारित किया गया। इस वर्ष मण्डियों की संख्या मात्र 2 थी जो अब बढ़कर 245 हो गई है। इनके साथ 356 उप–मण्डियॉ भी सम्बद्ध है। औरैया जनपद की

मण्डियों में कृषि उपज के विपणन की व्यवस्था है। अध्ययन क्षेत्र में 3 मुख्य मण्डियॉ है एवं उपमण्डियों की संख्या 7 है। इनमें से औरैया मुख्य मण्डी के अन्तर्गत सिकन्दरा उपमण्डी, अछल्दा मुख्य मण्डी के अन्तर्गत विधूना तथा रूरूगंज उपमण्डी, दिबियापुर मुख्य मण्डी के अन्तर्गत फफूंद, बेला, याकूबपुर एवं कंचौसी उपमण्डी सम्मिलित है।

नगरीय केन्द्रों में औद्योगिक क्षेत्रों का विकास एवं वृद्धि :-

औरैया नगर में वर्तमान समय में वृहद अथवा मध्यम आकार की कोई भी औद्योगिक इकाई नहीं है। यहां जो भी औद्योगिक विकास हुआ वह अत्यन्त ही अनियंत्रित रूप से हुआ है। कानपुर–इटावा मार्ग पर ट्रकों एवं बसों के टायरों पर रबरिंग करने वाली फैक्ट्रियां हैं। इसके अतिरिक्त तिलक नगर में टीन की चादरों से अलमारियां एवं बक्से बनाने के कारखाने हैं। औरैया नगर से 12 किमी0 उत्तर की ओर जनपद के मुख्यालय के पास नये औद्योगिक विकास के लिये यू0पी0एस0आई0डी0सी0 द्वारा 400 एकड़ भूमि का अधिग्रहण किया गया है जहां पर प्लास्टिक आधारित उद्योगों को स्थापित किये जाने की योजना है।

दिबियापुर नगर में औद्योगिक विकास के तौर पर भारत सरकार के दो बड़े प्लान्ट एन0टी0पी0सी0 एवं गैल हैं। गैल में प्लास्टिक दाना तैयार किया जाता है एवं एन0टी0पी0सी0 में बिजली बनाई जाती है। बिधूना नगर में सड़क के दोनों ओर तथा अन्य मुहल्लों में छोटे–छोटे उद्योगों का विकास हुआ है जिनमें तेल मिल, आटा चक्की एवं चमड़ा उद्योग प्रमुख हैं। अछल्दा नगर में दक्षिण की ओर औद्योगिक विकास हुआ है। यहां धान मिलों की प्रधानता है। फफूंद नगर में औद्योगिक विकास पुराने मुहल्लों में पाया जाता है। यहां चमड़ा आधारित उद्योग हैं एवं यहां बारूद बनाने वाले उद्योगों की प्रधानता है।

Reference/सन्दर्भ

1. Sharma, D.P. & Desai, V.V. — Rural Economy of India, Vikas Publishing House, Pvt. Ltd. New Delhi, 1980, p. 123

2. Khosla, D.N. — Envisioning Teachers Education In the 10th Plan and Beyond, New Delhi, 2003, p,. 56-67

3. Ranachandran, L., — Health care in Rural Community, A Pragmatic Approach. Bull. of the Gandhigram Institute of Rural health & Family Planning, XIV (1), P. 3

4. Shivalingaih, M. — The role of Market Centres in rural Development in Urban, System & Rural Development, Part II,(ed), S. Masood & M. Shivalingaih, University of Mysore, 1972, p. 197

5. Dixit, R.S. — Role and Rotionale of market centres in socio-economic development. Indian Journal of Marketing, 11 (1-2) (1980), pp. 21-25

6 Dixit, R.S. — Market synchronization. The Indian Geographical Journal, 55 (2), (1980) pp. 58-61.